بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 19.08.16 बैतुल फ़तूह लंदन।

जलसे का जो आध्यात्मिक वातावरण था, जिसको अपनों तथा ग़ैरों सब ने अभिव्यक्त किया, जो प्रभाव सब ने अपने भीतर अनुभव किया अल्लाह तआला करे कि उसका प्रभाव सदैव बना रहे और हम सदैव अल्लाह तआला के आभारी बन्दे बनते हुए अल्लाह तआला के आगे इस प्रतिज्ञा के साथ झुके रहें कि दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने का जो संकल्प हमने किया है तथा जिन बातों ने हम पर प्रभाव किया है उनको सदा अपने जीवन का अंश बनाने का प्रयास करते रहेंगे।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला की कृपा से पिछले सप्ताह जमात-ए-अहमदिया बर्तानियः का जलसा सालाना आयोजित हुआ और बावजूद कई जटिल परिस्थितयों के, जिनमें सर्वाधिक चिंता दुनया के हालात के कारण शांति पूर्ण रूप से जलसे के आयोजन की थी, बड़े सुन्दर रंग में तीन दिन व्यतीत हुए तथा जलसे का समापन हुआ, अलहमदु लिल्लाह। अल्लाह तआला जमाअत को भविष्य में भी हर प्रकार की जटिलताओं तथा संकट से सुरक्षित रक्खे। जलसे का जो आध्यात्मिक वातावरण था, जिसको अपनों तथा ग़ैरों सब ने अभिव्यक्त किया, जो प्रभाव सब ने अपने भीतर अनुभव किया अल्लाह तआला करे कि उसका प्रभाव सदैव बना रहे और हम सदैव अल्लाह तआला के आभारी बन्दे बनते हुए अल्लाह तआला के आगे इस प्रतिज्ञा के साथ झुके रहें कि दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने का जो संकल्प हमने किया है तथा जिन बातों ने हम पर प्रभाव किया है उनको सदा अपने जीवन का अंश बनाने का प्रयास करते रहेंगे। हमें सदैव यह दुआ करते रहना चाहिए कि ऐ अल्लाह! तेरी कृपाओं की जो वर्षा हम पर हो रही है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दी गई शुभ सूचनाओं को जिस प्रकार तू पूरा फ़रमा रहा है, वे हमारी किसी त्रूटि, किसी अयोग्यता, किसी दुर्बलता के कारण हमारे जीवन का अंश बनने से वंचित न कर दे। यह दुआ करनी चाहिए कि ऐ अल्लाह! नेकियों के करने की शक्ति भी तुझ से मिलती है तथा उन पर दृढ़ रहने की शक्ति भी तुझसे ही मिलती है। हम अपनी दुर्बलताओं पर नियन्त्रण भी तेरी कृपा से ही पा सकते हैं। हमारी तुच्छ चेष्टाओं में भी बरकत ही डालता रह तथा हमें सदा उन बन्दों में रख जो सदैव तेरे संग चिमटे रहने वाले हैं और तेरे आभारी हैं। अल्लाह तआला करे कि हम अल्लाह तआला के आभारी बन्दे बनते हुए अल्लाह तआला की इस घोषणा से लाभान्वित होते रहें कि لَئِنۡ شَكَرۡتُمۡ لَاَزِيۡدَنَّكُمۡ अर्थात- यदि तुम शुक्र करोगे तो मैं अवश्य तुम्हें बढ़ाऊँगा, तुम्हें और अधिक प्रदान करुंगा।

अल्लाह तआला की कृपा से जलसे के काम, जलसे से पहले शुरु हो जाते हैं तथा उनको करने के लिए ख़ुद्दाम, अतफ़ाल और अन्सार वक़ार-ए-अमल के लिए स्वयं को प्रस्तुत करते हैं तथा बड़े परिश्रम और श्रद्धा से लोग कार-सेवा करते हैं और फिर जलसे की ड्यूटियाँ भी देते हैं। गत वर्ष भी कैनेडा से ख़ुद्दाम कार-सेवा के लिए आए थे फिर इस वर्ष अमरीका से भी ख़ुद्दाम वक़ार-ए-अमल के लिए आए तो इस प्रकार अब यह काम, वक़ार-ए-अमल भी अंर्तराष्ट्रीय रूप धारण कर गया है। कार्य-कर्ता दुनया के विभिन्न देशों से आते हैं। अमरीका के अधिकांश ख़ुद्दाम ने जलसे से पहले काम किया तथा कैनेडा के 150 से अधिक ख़ुद्दाम ने जलसे के बाद के वाईन्ड-अप में काम किया। अल्लाह तआला इन सबको प्रतिफल प्रदान करे। यू.के. के खुद्दाम तथा अतफ़ाल जो कार-सेवा करते रहे और ड्यूटियाँ देते रहे वे भी निःसन्देह हमारे आभार के अधिकारी हैं उन्होंने ने भी

बड़े परिश्रम से काम किया तथा सदैव करते हैं इनके साथ साथ, अर्थात यू.के. के अतफ़ाल व ख़ुद्दाम जो ड्यूटियाँ देते हैं।

यू.के. के लगभग छः हज़ार लड़कियाँ, लड़के, पुरुष, महिलाएँ तथा बच्चे जलसे के मेहमानों की सेवा पर नियुक्त थे। यह सब अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि उसने इतनी बड़ी संख्या में कारकुन उपलब्ध फ़रमाए जो शौचालय की सफ़ाई से लेकर खाना पकाने, खाना खिलाने और फिर जलसा ग्रह के विभिन्न काम, सैक्योरिटी, पार्किंग तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने और फिर उन्हें समेटने तक बड़ी दक्षता एंव योजना बद्ध होकर काम करते रहे। ये दृश्य हमें दुनया में अन्य किसी स्थान पर नज़र नहीं आएँगे। अतः ये कारकुन हमारे अत्यधिक शुक्रिया के अधिकारी हैं तथा इस प्रकार इन कारकुनों को भी, इन काम करने वालों को भी, इन स्वयं सेवकों को भी अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए कि उसने उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अतिथियों की सेवा का अवसर प्रदान किया और यह दुआ करनी चाहिए कि भविष्य में अल्लाह तआला उन्हें पहले से बढ़कर इस सेवा का सामर्थ्य प्रदान करे। बाहर से आए हुए मेहमानों ने इस बात पर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया कि किस प्रकार उन्हें बच्चों, युवाओं तथा बूढ़ों ने काम करते हुए प्रभावित किया। कुछ अतिथिगणों की भावनाएँ बयान कर देता हूँ।

जलसे के प्रोग्राम भी तथा काम करने वाले भी ऐसी गुप्त तबलीग़ कर रहे होते हैं जो उससे कई गुणा अधिक होती है जो हम लिट्रेचर बाँट कर अथवा अन्य माध्यमों के द्वारा करते हैं। बैनिन के रक्षा मन्त्री जलसे में शामिल हुए। वे कहते हैं मुझे इस जलसे में शामिल होकर अमन और मुहब्बत के दूतों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। प्रत्येक बच्चा, युवा, दूसरों से शिष्टापूर्वक मिलता हुआ दिखाई दिया। यदि किसी को दूसरे की भाषा समझ नहीं भी आती थी तो मुस्कुराते हुए अभिनंदन करता और मेहमान की भाषा में कुछ न कुछ कहने का अवश्य प्रयास करता। जलसा सालाना वास्तविक सद्भावना का एक बड़ा उदाहरण है। कहते हैं कि मैं इस जलसे को वास्तविक शांति स्थल कहूँगा। इस जलसे में उपस्थित प्रत्येक बच्चा, बड़ा तथा बूढ़ा, बलिदान देकर दूसरों के आराम का ध्यान रखता है। फिर यह कहते हैं कि आपका जलसा मेरे लिए एक एकैडमी का रूप है जहाँ से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैंने इतने बड़े आयोजन में किसी को धक्कम पेल करते नहीं देखा। प्रत्येक वस्तु सुव्यवस्था एंव सुन्दरता के साथ चल रही थी। मेरे लिए यह अद्भुत था कि ड्यूटी पर उपस्थित प्रत्येक छोटा बड़ा, मेहमान की आवश्यकता की पूर्ति में लगा हुआ था। यदि किसी चीज़ के लिए संकेत भी कर दिया जाता और वह उपलब्ध न होती तो उसे तुरन्त ख़रीद कर आवश्यकता पूर्ति का प्रयास किया जाता। सर्वोच्च बात समस्त जलसे में सम्मिलित होने वालों की उत्तम सुरक्षा एंव सुन्दर व्यवस्था का होना था। सुरक्षा की एक उत्तम एंव योजनाबद्ध व्यवस्था थी जिससे लग रहा था कि किसी निपुण टीम ने इसकी व्यवस्था की हुई है जबकि वहाँ मुझे न तो कोई पुलिस कर्मी तथा न ही कोई सेना के लोग दिखाई दिए। फिर ये कहते हैं कि मैं जानने का प्रयास करता रहा कि इस व्यवस्था के पीछे क्या भेद है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि ये लोग एक ख़िलाफ़त के मानने वाले हैं तथा इस कारण से एक ऐसी क़ौम तय्यार हो गई है जो प्रत्येक बलिदान के लिए तत्पर रहती है।

फिर बैनिन के ही एक पत्रकार भी आए हुए थे। कहते हैं कि इस जलसे की उत्तम व्यवस्था के सम्बंध में यदि किसी को बताया जाए तो वह उस समय तक विश्वास नहीं करेगा जब तक स्वयं अपनी आँखों से न देख ले। आपके जलसे में शामिल होकर मुझे आशा का सन्देश मिला है। विश्व के प्रत्येक छोर पर निजि स्वार्थ के कारण विनाश किया जा रहा है किन्तु आपके जलसे में इन युवाओं तथा बच्चों को देखकर जो अपनी चिंता किए बिना दूसरों की सेवा के लिए उपस्थित एंव तत्पर रहते हैं। इन युवाओं तथा बच्चों के द्वारा एक नया संसार जन्म लेगा जिसमें स्वार्थ नहीं होगा बल्कि दूसरों की सेवा तथा उच्चतम उद्देश्य होगा और इस उच्च स्तरीय शिक्षा के साथ इस्लाम अहमदियत दूसरों के लिए आज एक चमकदार शीशे की भांति है जो इस्लाम का सुन्दर चेहरा दुनया को दिखाता है। कहते हैं कि मैं पत्रकार के रूप में विश्व के अधिकतर भागों में गया हूँ, सऊदी अरब में हज्ज के प्रबन्ध देखे, ईरान में भी विशाल समायोजन में सम्मिलित हुआ। मैंने यू.एन.ओ. के अंर्तगत भी बड़ी कान्फ्रन्सों में भाग लिया परन्तु मैंने इस प्रकार के उत्तम प्रबन्ध किसी अन्य स्थान पर नहीं देखे। इसका कारण निःस्वार्थ तथा प्रेम करने वाले तथा मानवता का सम्मान करने वाले वे युवा, बच्चे तथा बूढ़े हैं जो इस जलसे में हर समय सेवा के लिए तय्यार रहते हैं तथा जिन्हें उनके ख़लीफ़ः का मार्ग दर्शन हर समय मिलता रहता है। कहते हैं कि मैं अपने दिल का हाल पूर्णतः अपने शब्दों में बयान करने में असमर्थ हूँ। कहते हैं- यह मेरे लिए बड़ा आश्चर्य जनक अनुभव है कि जीवन के प्रत्येक वर्ग से सम्बंध रखने वाले लोगों को हंसते और

मुस्कुराते चेहरों के साथ मेहमानों की सेवा करते देखा। मैं यह बात जानने में असफल रहा कि इनमें से कौन धनी है और कौन निर्धन, एक ही रीति से, एक ही भावना से वे दूसरों के आराम के लिए दिन और रात सेवा करते नज़र आए। कहते हैं कि एम.टी.ए. की व्यवस्था ने भी मुझे चकित किया। मैं बैनिन में नैशनल टी.वी. का डारैक्टर रहा हूँ मैंने आजतक टी वी के सीधे प्रसारण के इतने सुव्यवस्थित प्रबन्ध कहीं और नहीं देखे। यू.एन.ओ. में भी इतनी भाषाओं में सीधे अनुवाद नहीं होते जितने आपके यहाँ एम.टी.ए. के द्वारा सीधे सम्बोधनों के अनुवाद का प्रबन्ध था। इस जलसे में शामिल प्रत्येक व्यक्ति सीधे अपनी भाषा में भाषणों का अनुवाद सुनकर अनुभव करता था कि जलसा उसके अपने देश में हो रहा है, उसकी अपनी भाषा और क़ौम में हो रहा है। मैंने अहमदियत में यह बात सीखी है कि ईमान को शेष समस्त बातों से ऊपर रक्खो और सत्य की ही जीत होती है। शक्ति शाली सदैव के लिए शक्ति शाली नहीं है। कहते हैं जलसे में शामिल होकर मैं तो कहूँगा कि ख़ुदा से मिलाने वाला रास्ता आज भी मौजूद है, यदि इसके अनुसार कोई चलना चाहे तो।

कोंगो कन्शासा के एक प्रदेश के एटार्नी जर्नल भी शामिल थे। वे कहते हैं मैं पच्चीस वर्षों से मजिस्ट्रेट के रूप में काम कर रहा हूँ। मैंने जलसे का गहराई से निरीक्षण किया और यह निष्कर्ष निकाला कि केवल धन से कुछ नहीं किया जा सकता, जबतक सहमति और एकता न हो। जब आप एक शरीर की भांति हो जाएँ तो फिर सब कुछ सम्भव हो जाता है। जलसे के कारकुन एक शरीर की भांति हो गए तो उन्होंने असम्भव को सम्भव कर दिखाया। जंगल को विश्राम योग्य बना दिया जहाँ सब कुछ उपलब्ध था। स्वच्छ शौचालय, विश्राम ग्रह, रेडियो और टी वी स्टेशन्ज़ जो विभिन्न भाषाओं में प्रोग्राम प्रसारित कर रहे थे। विभिन्न देशों से आए हुए धनवान, निर्धन, बड़े पदों वाले, राजनेता, ज्ञानी पुरुष, बुद्धिजीवी, सब एक होकर काम कर रहे थे। लगभग चालीस हज़ार मेहमानों के खाने पीने और अन्य आवश्यकताओं का ध्यान रखना कोई सरल कार्य नहीं था परन्तु यह काम लगभग छः हज़ार कार्य-कर्ता बिना किसी दुविधा और हंगामे के प्रसन्नता पूर्वक कर रहे थे। इन स्वेच्छा कार्य-कर्ताओं में तीन वर्ष से लेकर अस्सी वर्ष की आयु के लोग शामिल थे अर्थात बच्चे भी और बूढ़े भी। ये स्वयं-सेवी दूसरों की सेवा करके ख़ुशी अनुभव कर रहे थे। मैंने तो हर ओर प्रेम और भाईचारा ही देखा है। कहते हैं- मैं समझता हूँ कि अहमदिया जमाअत यह काम बड़े विशेष रंग में कर रही है और यह कभी असफल नहीं हो सकती, इन्शाअल्लाह। कहते हैं- मैं तो सबको कहना चाहता हूँ कि जमाअत को निकट से देखो तो आपको स्वयं समझ आजाएगी। कहते हैं कि जब जलसे में आया तो केवल पहले आधे घन्टे स्वयं को पराया अनुभव किया उसके बाद लोग स्वयं आकर मुझसे मिलते रहे। ऐसा लग रहा था जैसे हम सब एक दूसरे को वर्षों से जानते हैं। यह भी जलसे की एक सुन्दरता है कि केवल जलसे में काम करने वाले ही अन्य लोगों को प्रभावित नहीं करते बल्कि जलसे में शामिल होने वाले भी प्रभावित कर रहे होते हैं और एक प्रकार की गुप्त तबलीग़ हो रही होती है इसके द्वारा। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- अतः इस दृष्टि से भी जहाँ ड्यूटी देने वाले अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार बनें कि वे अपने अमल से इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा रहे हैं तथा ग़ैर-मुस्लिमों को प्रभावित कर रहे हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के उत्तराधिकारी बन रहे हैं, इस दृष्टि से वहाँ शामिल होने वाले अहमदी भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें कि अल्लाह तआला उनके द्वारा गुप्त तबलीग़ करा रहा है।

नाईजेरिया राष्ट्रपति के धार्मिक मामलों के विशेष सलाहकार भी इस जलसे में शामिल हुए थे। वे कहते हैं कि मैं लगभग पूरे वर्ष यात्रा करता हूँ तथा धार्मिक सभाओं में शामिल होता हूँ परन्तु मैंने आजतक कभी ऐसा आध्यात्मिक दृश्य नहीं देखा। जलसे में शामिल होने पर मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि आसमान से नूर बरस रहा है। बैअत का दृश्य देखने के बाद तो कहते हैं कि मानो मैं बैअत-ए-रिज़वान में शामिल हुआ हूँ।

जापान से एक दोस्त अयोमा यूसुफ़ साहब जो कि प्रसिद्ध विद्वान तथा जापान एग्रिकल्चर के अध्यक्ष हैं, शामिल हुए। कहते हैं कि अहमदी युवाओं तथा बच्चों की भावाएँ प्रशंसनीय हैं। आज दुनया की किसी भी क़ौम में ऐसे नौजवान न होने के बराबर हैं जो स्वयं सेवकों के रूप में इस प्रकार की सेवा कर रहे हों। यह दृश्य केवल जलसा सालाना में नज़र आ रहा है। कहीं नौजवान भाग भाग कर खाना खिलाने के लिए उत्सुक हैं, कहीं कोई मेहमान को लाने ले जाने के लिए गाड़ियों की व्यवस्था में लगा है, कहीं बच्चे पानी पिला रहे हैं तो कहीं बड़ी आयु के लोग विभिन्न कामों में व्यस्त हैं। विशेष रूप से बच्चों की उत्साह

जनक उपस्थिति बताती है कि अहमदियत का वर्तमान भी रौशन है तथा भविष्य भी रौशन है, और इन्शाअल्लाह है।

फिर योगेन्डा के उपाध्यक्ष एडवर्ट सीकान्दी Edward Ssekandi पधारे हुए थे। कहते हैं कि जब उन्हें जलसा गाह का टूर कराया गया और बताया कि समस्त कार्य-कर्ता स्वयं सेवक हैं तो बड़े चकित हुए। फिर सैक्योरिटी वालों को देखकर पूछने लगे कि शेष स्वयं सेवक तो ठीक, परन्तु निःसन्देह इनको पैसे दिए जाते होंगे तो जनाब को जब बताया गया कि यहाँ काम करने वाले समस्त कारकुन स्वयं-सेवकों के रूप में काम कर रहे हैं तो बड़े प्रभावित हुए। कहने लगे मैंने अपने जीवन में कभी भी मुसलमानों का इतना बड़ा समागम नहीं देखा जहाँ सारे लोग शांति पूर्वक एक साथ रह रहे हों और मैंने मुसलमानों के विषय में यही सुन रक्खा था कि लोगों के गले काटते हैं और दूसरों को कष्ट देते हैं। योगेन्डा में भी मुसलमान आपस में लड़ते रहते हैं और शासन को बार बार दख़ल देना पड़ता है परन्तु अब मुझे पता चला कि वास्तविक और सच्चा मुसलमान कौन है और इस्लाम की शिक्षा अमन व सलामती की शिक्षा है।

अतः जहाँ सामान्य रूप से प्रत्येक अहमदी, जलसे में शामिल होने वालों के लिए आस्था और कर्मों की सुन्दरता का कारण बनता है, जलसे में प्रत्येक अपना अपना सुधार करता है, कर्मों के सुधार की ओर भी अधिकांश लोगों का ध्यान होता है वहीं जलसा ग़ैरों को भी प्रभावित करता है और केवल प्रशिक्षण की दृष्टि से ही नहीं बल्कि अब तो इसका विस्तार इतना हो गया है कि अहमदियत और वास्तविक इस्लाम की तबलीग़ के नए से नए मार्ग खोल रहा है जलसा सालाना। वास्तविक उद्देश्य, मूल उद्देश्य तो तर्बियत है जमाअत के लोगों की, परन्तु ग़ैरों के यहाँ आने से तबलीग़ के बड़े नए रास्ते खुल रहे हैं।

फिर बैल्जियम की एक महिला हैं, फ़ातमा दियालो साहिबा, अपने दो बच्चों के साथ जलसे में शामिल हुईं और बच्चों के साथ ही उन्होंने बैअत भी कर ली। कहती हैं- मुझे मेरे पति ने जमाअत से परिचित कराया था परन्तु मैं जमाअत के बारे में असमंजस का शिकार थी। कोई कहता था कि अहमदिया जमाअत अन्य सम्प्रदायों की भांति एक सम्प्रदाय है। कोई कहता था कि ये लोग मुसलमान ही नहीं हैं अतः मैंने निश्चय किया कि मैं जलसे में शामिल होकर सच्चाई का पता लगाऊँ। जलसे में सम्मिलित होने बाद मुझे पता चला कि अहमदिया जमाअत के लोग बहुत अच्छे, सुशील तथा सबसे बढ़कर सच्चे मुसलमान हैं और फिर मेरे सम्बोधनों का वर्णन करते हुए कहती हैं कि उनमें आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों का वर्णन रहा। अमन, शांति, सच्चाई, साहस तथा सहन शीलता का अनुरोध था। कहती हैं कि ख़ुदा का शुक्र है कि उसने हमें वह मार्ग दिखाया जो उसके अस्तित्व की ओर ले जाने वाला है। फिर धन्यवाद भी करती हैं कि असंख्य स्वयं-सेवकों ने दिन रात थकावट के बावजूद हमारे आराम का ध्यान रक्खा और हमें बड़ा सम्मान दिया।

इस बार अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मीडिया में भी गत वर्षों की अपेक्षा जलसे की अत्यधिक क्वरैज हुई। जलसा सालान यू.के. का प्रसारण पहली बार एम.टी.ए. अफ्रीक़ा इन्टर नैशनल के द्वारा दिखाया गया। पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीक़ा से सैंकड़ों की संख्या में लोगों ने मुबारकबाद तथा बधाई सन्देश भेजे।

अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की परिधि अधिक से अधिक होती चली जा रही है और इस संदर्भ में हमारी अल्लाह तआला के प्रति आभार प्रकट करने की परिधि भी विकसित होती चली जानी चाहिए ताकि हम لَأَزِيدَنَّكُمْ के उत्तराधिकारी बनते चले जाएँ। अल्लाह तआला हमारे इनामों को अधिक विस्तृत करता चला जाए। अतः जलसे में शामिल होने वाला प्रत्येक अहमदी जो यहाँ नहीं भी शामिल थे, दुनया में देख रहे थे, प्रत्येक अहमदी को अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी को चरम सीमा तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए और इसका एक ही तरीक़ा है कि हम अल्लाह तआला के आदेशानुसार काम करने वाले बनें। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।